http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 1, 12-13

Article ID:548

समूह आधारित कृषि प्रसार की उपयोगिता

सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल[1*], मंजुल जैन[2], रवि पटेल[2], रजनीश कुमार[3]

[1]कृषि प्रसार एवं संप्रेषण विभाग, सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश- 211007

[2]सहायक, प्रोफेसर, कृषि विद्यालय, एकलव्य विश्वविद्यालय, (म.प्र.)

[3]सहायक प्रोफेसर, कृषि विद्यालय, ज्ञानवीर विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश) 470115

[*]अनुरूपी लेखक

सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल[*]

1. प्रस्तावना

कृषि प्रसार का उद्देश्य केवल नई तकनीकों की जानकारी देना नहीं, बल्कि किसानों में सीखने, निर्णय लेने और सामूहिक रूप से आगे बढ़ने की क्षमता विकसित करना भी है। व्यक्तिगत संपर्क आधारित प्रसार पद्धति की सीमाओं को देखते हुए समूह आधारित कृषि प्रसार एक प्रभावी, सहभागी और लागत-कुशल दृष्टिकोण के रूप में उभरा है। इस पद्धति में समान रुचि, समस्या या फसल से जुड़े किसानों को समूहों में संगठित कर ज्ञान, कौशल और अनुभव साझा किए जाते हैं।

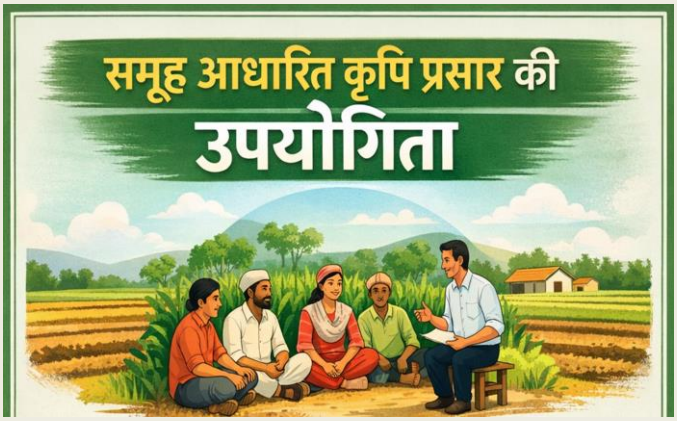

2. समूह आधारित कृषि प्रसार की अवधारणा

समूह आधारित कृषि प्रसार वह प्रक्रिया है, जिसमें किसानों को स्वयं सहायता समूह, किसान समूह, किसान उत्पादक संगठन, सहकारी समितियाँ, किसान क्षेत्र विद्यालय आदि के माध्यम से संगठित कर कृषि ज्ञान का प्रसार किया जाता है। इस प्रणाली में सीखना सामूहिक होता है और निर्णय सहभागिता के आधार पर लिए जाते हैं।

3. समूह आधारित कृषि प्रसार की प्रमुख उपयोगिता

3.1 व्यापक पहुँच और लागत में कमी

समूह आधारित प्रसार के माध्यम से एक ही समय में बड़ी संख्या में किसानों तक जानकारी पहुँचाई जा सकती है, जिससे प्रसार लागत एवं समय दोनों की बचत होती है।

3.2 सहभागी शिक्षण एवं व्यवहार परिवर्तन

समूह चर्चा, प्रदर्शन और अनुभव साझा करने से किसान सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागी बनते हैं, जिससे तकनीक अपनाने की संभावना बढ़ती है।

3.3 किसान–किसान ज्ञान आदान–प्रदान

समूह आधारित प्रणाली में किसान एक-दूसरे के अनुभवों से सीखते हैं। यह स्थानीय ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में सहायक है।

3.4 आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास

समूह गतिविधियों से किसानों में आत्मविश्वास, नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है, विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों में।

3.5 छोटे एवं सीमांत किसानों को सशक्त बनाना

सामूहिक मंच मिलने से छोटे किसानों की आवाज़ मजबूत होती है, जिससे वे बाजार, नीति और संस्थानों से बेहतर जुड़ पाते हैं।

3.6 तकनीक अपनाने की गति में वृद्धि

समूह में प्रदर्शन और परिणाम देखकर किसान नई तकनीकों को तेज़ी से अपनाते हैं।

3.7 बाजार संपर्क और सौदेबाजी शक्ति में वृद्धि

एफपीओ और सहकारी समितियों के माध्यम से समूह आधारित प्रसार किसानों की बाज़ार पहुँच, मूल्य प्राप्ति और सौदेबाजी शक्ति बढ़ाता है।

3.8 जोखिम प्रबंधन और सामूहिक समाधान

समूह चर्चा से फसल जोखिम, कीट–रोग प्रबंधन और जलवायु अनुकूलन के सामूहिक समाधान विकसित होते हैं।

3.9 महिला एवं युवा किसानों की भागीदारी

समूह आधारित मॉडल महिलाओं और युवाओं को नेतृत्व और निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने का अवसर देता है।

3.10 डिजिटल कृषि प्रसार को सुदृढ़ बनाना

WhatsApp समूह, डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से समूह आधारित प्रसार डिजिटल तकनीकों की प्रभावशीलता को बढ़ाता है।

4. समूह आधारित कृषि प्रसार के प्रमुख रूप

- ✓ किसान समूह एवं स्वयं सहायता समूह
- ✓ किसान उत्पादक संगठन
- ✓ किसान क्षेत्र विद्यालय
- ✓ सहकारी समितियाँ
- ✓ किसान क्लब एवं युवा किसान समूह

5. समूह आधारित कृषि प्रसार की सीमाएँ

- ✓ समूह प्रबंधन एवं समन्वय में कठिनाई
- ✓ सभी सदस्यों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण
- ✓ नेतृत्व संघर्ष या आंतरिक मतभेद
- ✓ प्रशिक्षित समूह सुविधाकर्ताओं की आवश्यकता

6. निष्कर्ष

समूह आधारित कृषि प्रसार एक प्रभावी, सहभागी, समावेशी और टिकाऊ विस्तार रणनीति है। यह न केवल कृषि तकनीकों के प्रसार को तेज़ करता है, बल्कि किसानों में आत्मविश्वास, संगठनात्मक शक्ति और बाजार उन्मुखता विकसित करता है। बदलती कृषि चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में समूह आधारित कृषि प्रसार किसान सशक्तिकरण और सतत कृषि विकास की दिशा में एक अनिवार्य दृष्टिकोण बन चुका है।